अध्याय XI : अंतरिक्ष विभाग

11.1 माँग प्रभारों का परिहार्य भुगतान

सही प्रकार से विस्तृत खपत आवश्यकताओं का निर्धारण करने में इसरो उपग्रह केन्द्र तथा इसरो टेलीमेटरी, ट्रेकिंग एवं कमांड नेटवर्क की विफलता तथा अनुबंधित मांग को कम करने हेतु कार्यवाही करने में विलम्ब का परिणाम विद्युत की खपत हेतु ₹3.72 करोड़ के परिहार्य भुगतान में हुआ।

इसरो उपग्रह केन्द्र (आई.एस.ए.सी.) तथा इसरो टेलीमेटरी, ट्रेकिंग एवं कमांड नेटवर्क (आई.एस.टी.आर.ए.सी.), बैंगलोर, अंतरिक्ष विभाग (अ.वि.) के अंतर्गत भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की संघटन इकाईयों ने बैंगलोर में अपनी इकाईयों हेतु विद्युत आपूर्ति के लिए क्रमशः अप्रैल 2007 तथा अप्रैल 2008 में बैंगलोर विद्युत आपूर्ति कम्पनी (बैसकॉम) के साथ एक करार किया। करार आई.एस.ए.सी. द्वारा 5500 के.वी.ए. विद्युत आपूर्ति (अनुबंधित माँग) तथा आई.एस.टी.आर.ए.सी. द्वारा 2500 के.वी.ए. विद्युत आपूर्ति हेतु किए गए थे।

उच्च दाब लाईनों हेतु बैसकॉम की टैरिफ नीति के अनुसार यदि विद्युत खपत अनुबंधित माँग से कम थी तो बिल की माँग जो न्यूनतम अनुबंधित माँग का 75 प्रतिशत अथवा माह के दौरान दर्ज आधिक्य माँग थी, जो भी अधिक थी को अदा किया जाना था।

अभिलेखों की लेखापरीक्षा जाँच ने प्रकट किया कि आई.एस.ए.सी. में अप्रैल 2007 से दिसम्बर 2011 की अवधि के दौरान तथा आई.एस.टी.आर.ए.सी. में अप्रैल 2008 से अप्रैल 2011 की अवधि के दौरान विद्युत की मासिक खपत कभी भी अनुबंधित माँग तक नहीं पहुँची थी। चूंकि विद्युत की खपत अनुबंधित मांग से काफी कम थी इसलिए उच्च दाब लाईनों हेतु बैसकॉम टैरिफ नीति के अनुसार बिल की माँग होने से अनुबंध माँग का 75 प्रतिशत (आई.एस.ए.सी. हेतु 4125 के.वी.ए. तथा आई.एस.टी.आर.ए.सी. हेतु 1875 के .वी.ए.) प्रत्येक माह अदा किया जा रहा था। अवधि के दौरान अनुबंधित माँग की तुलना में दर्ज अधिकतम वास्तविक माँग आई.एस.ए.सी. के मामले में केवल 33 प्रतिशत तथा आई.एस.टी.आर.ए.सी. हेतु 39 प्रतिशत थी जिसने स्पष्ट रूप से दर्शाया कि अनुबंधित माँग वास्तविक आवश्यकता से सार्थक रूप से अधिक थी। इस प्रकार, अधिक अनुबंध माँग हेतु करार का परिणाम वास्तव में उपयोग न की गई विद्युत की लागत के प्रति ₹ 3.72 करोड़ के परिहार्य आधिक्य व्यय करने में हुआ जैसा कि नीचे तालिका में विवरण दिया गया है:

इकाई का नाम	अनुबंध माँग (के.वी.ए.में)	बिल की माँग (अनुबंध माँग का 75%) के.वी.ए. में)	प्रति-माह वास्तविक खपत को पाया जाना (के.वी.ए.में)	बिल की अवधि	निकाले गए प्रभार (₹ लाख में)	वास्तविक भुगतान (₹ लाख में)	आधिक्य भुगतान (₹ लाख में)
इसरो उपग्रह केन्द्र-आई.एस.ए.सी.	5500	4125	1182-1788	अप्रैल 2007 से दिसम्बर 2011	162.22	456.23	294.01
आई.एस.टी.आर.ए.सी.-आई.डी.एस.एन परियोजना	2500	1875	165-979	अप्रैल 2008 से अप्रैल 2011	39.48	117.52	78.04
योग					**201.70**	**573.75**	**372.05**

लेखापरीक्षा में इसे इंगित किए जाने पर (दिसम्बर 2009), आई.एस.ए.सी. ने तथ्यों को स्वीकार करते हुए उत्तर दिया (जनवरी 2012) कि आवश्यकता निर्धारण के अनुसार वर्ष 2014 की समाप्ति तक प्रत्याशी विद्युत आवश्यकता लगभग 4000 के.वी.ए. होगी तथा इसलिए इन्होंने 5500 के.वी.ए. से 4000 के.वी.ए. तक (3000 के.वी.ए. की न्यूनतम प्रभारीय माँग का भार डालते हुए) केन्द्र की अनुबंध माँग को घटाने हेतु एक नया करार करने के लिए बैसकॉम को आवेदन किया था (सितम्बर 2011)। इसने आगे बताया था कि आई.एस.ए.सी. 4000 के.वी.ए. तक अनुबंधित माँग को कम करने हेतु बैसकॉम के साथ मामले का अनुसरण कर रहा था तथा उनका आवेदन प्रक्रियाधीन था (जनवरी 2012)।

आई.एस.टी.आर.ए.सी. ने अपने उत्तर में बताया (मई 2011) कि संशोधित निर्धारण के अनुसार इष्टतम अधिकतम माँग 1100 के.वी.ए. तक पहुँचनी थी तथा आई.एस.टी.आर.ए.सी. ने 2500 के.बी.ए. से 1200 के.बी.ए. तक अनुबंध माँग को कम करने हेतु बैसकॉम को अनुरोध किया था (जून 2010)।

विद्युत माँग का अधिक अनुबंध की ओर इंगित करने वाली लेखापरीक्षा अभ्युक्तियों के आधार पर आइ.एस.टी.आर.ए.सी. तथा आई.एस.ए.सी. ने केवल क्रमशः जून 2010 तथा सितम्बर 2011 में जाकर ही अनुबंध माँग को कम करने हेतु कार्रवाई प्रारम्भ की। इस प्रकार, प्रथम दृष्टांत में विद्युत खपत आवश्यकताओं का ठीक-ठीक निर्धारण करने में आई.एस.ए.सी. तथा आई.एस.डी.आर.ए.सी. की विफलता सहित अनुबंधित माँग को कम करने हेतु कार्रवाई करने में विलम्ब के परिणामस्वरूप बिल की माँग के प्रति विद्युत की खपत हेतु ₹ 3.72 करोड़ (दिसम्बर 2011 तक) का परिहार्य भुगतान हुआ।